## पद ६३

(राग: झिंजोटी - ताल: धुमाळी)

चला जाऊं पाहू भीम चाळकापुरिचा।।ध्रु.।। सव्य कर उभा केला। पुच्छ वरुनि मुरिडला। डावा कर कटीं ठेविला। मुख उत्तरेचा।।१।। पदक-माळ शोभे गळा। भालीं कस्तुरिचा टिळा। नेसे पितांबर फिवळा। कांठ जरीचा।।२।। अनाथाचें विघ्न वारी। आत्मारामा साह्यकारी। माणिकाचा पूर्ण करी। हेतु अंतरीचा।।३।।